बी.एच.आई.सी.-109: भारत का इतिहास-V (*c.*1550-1605)

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BHIC-109**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी. -109 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-2027**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) सोलहवीं सदी के भारत में लोकभाषा साहित्यिक परंपरा की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा कीजिए। 20

2) भारत में मुगल राज्य की प्रकृति का अध्ययन करने के लिए नए रुझानों और दृष्टिकोणों पर चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) नायक राज्यों के उद्भव और विजयनगर राज्य के साथ उनके संबंधों पर चर्चा कीजिए। 10

4) मनसबदारी प्रणाली पर एक नोट लिखिए। 10

5) दक्कन में भूमि अधिकारों की मुख्य श्रेणियां क्या थीं? चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) असम बुरुंजी 6

7) लोदी राजत्व की प्रकृति 6

8) सद्र–उस–सुदूर 6

9) मुगल कुलीन वर्ग की संरचना 6

10) उज़बेगों के साथ मुगलों के संबंध 6

1) सोलहवीं सदी के भारत में लोकभाषा साहित्यिक परंपरा की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा कीजिए। (20 अंक)

उत्तर

सोलहवीं सदी के भारत में लोकभाषाओं का साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं था। वह धार्मिक अनुभव, सामाजिक विचार, क्षेत्रीय पहचान और राजनीतिक संरक्षण की बदलती दुनिया से जुड़ा था। इस युग में संस्कृत और फारसी का महत्त्व बना रहा, लेकिन अवधी, ब्रजभाषा, बंगला, असमिया, ओड़िया, मराठी, गुजराती, पंजाबी और दक्षिण की तमिल, तेलुगु तथा कन्नड़ जैसी भाषाओं में रचना का विस्तार हुआ। अलग-अलग क्षेत्रों में इसकी गति और विशेषताएँ भिन्न थीं; इसलिए इसे किसी एक धार्मिक या साहित्यिक आंदोलन तक सीमित नहीं किया जा सकता।

भक्ति और लोकानुभव की अभिव्यक्ति

भक्ति साहित्य इस परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण आधार था। अनेक कवियों ने ईश्वर से निजी संबंध, प्रेम, समर्पण और नैतिक आचरण को सामान्य बोलचाल की भाषा में व्यक्त किया। उत्तर भारत में रामभक्ति और कृष्णभक्ति की धाराओं ने अवधी और ब्रजभाषा को व्यापक प्रतिष्ठा दी। तुलसीदास की ‘रामचरितमानस’ ने रामकथा को अवधी में रूपायित कर उसे स्थानीय श्रोताओं के निकट पहुँचाया। सूरदास की ब्रजभाषा रचनाओं में कृष्ण की बाललीला, वात्सल्य और प्रेम के भावों को सशक्त स्वर मिला। मीरा के पदों में व्यक्तिगत भक्ति, सामाजिक रूढ़ियों से संघर्ष और भावनात्मक स्वतंत्रता दिखाई देती है। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि धार्मिक विषय भी स्थानीय अनुभव और सांस्कृतिक शब्दावली में ढल गए।

निर्गुण परंपरा से संबंधित कबीर और गुरु नानक की वाणी का प्रसार भी इस व्यापक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का हिस्सा था। इनके संदेश में बाहरी आडंबर, जातिगत ऊँच-नीच और धार्मिक संकीर्णता की आलोचना मिलती है। यह मानना ठीक नहीं होगा कि सभी भक्त कवियों के सामाजिक विचार एक जैसे थे; फिर भी अनेक रचनाओं ने सामान्य लोगों को विचार-विमर्श की भाषा प्रदान की। गेय पद, साखी, दोहा तथा कथा-प्रसंग जैसी शैलियों ने इन विचारों को स्मरणीय बनाया।